

बौद्धिया जीवन आमारै गाउँ कौइ



बौद्धिया जीवन आमारै गाउँ कौइ

Bangani
uttarkashi, uttrakhand, india

For permission to reuse, contact the copyright holder.

Big book in Bangani language
Community based Book

प्रकाशण:-
NLCI
बंगाणी मसी समिति समू

दो बात

यह किताब बंगाणी भाषा में बनायी गयी है। इस किताब में एक कहानी है जिसे 10-12 पेजों में बनाया गया है और हर पेज में लगभग 2-3 वाक्य है। इस किताब में हर एक वाक्य के अनुसार चित्र भी डाला गया है। इन चित्रों के आधार से पढ़ने वाला कहानी बता सकता है और पढ़ाने वाला कहानी सुना सकता है। इस पुस्तक का उपयोग साक्षरता कार्यक्रम में किया जाता है। यह किताब बढ़े ही आसान और बहुत ही कम शब्दों में और बहुत सरल रीति से बनायी गयी है। ताकि जो लोग पढ़ने की शुरूआती स्तर में हैं वह आसानी से इस कहानी को अपनी अपनी मातृ-भाषा में पढ़के आसानी से समझ सकें और अपनी मातृ-भाषा में पढ़ने और लिखने का प्रयास कर सकें।

॥धन्यवाद ॥



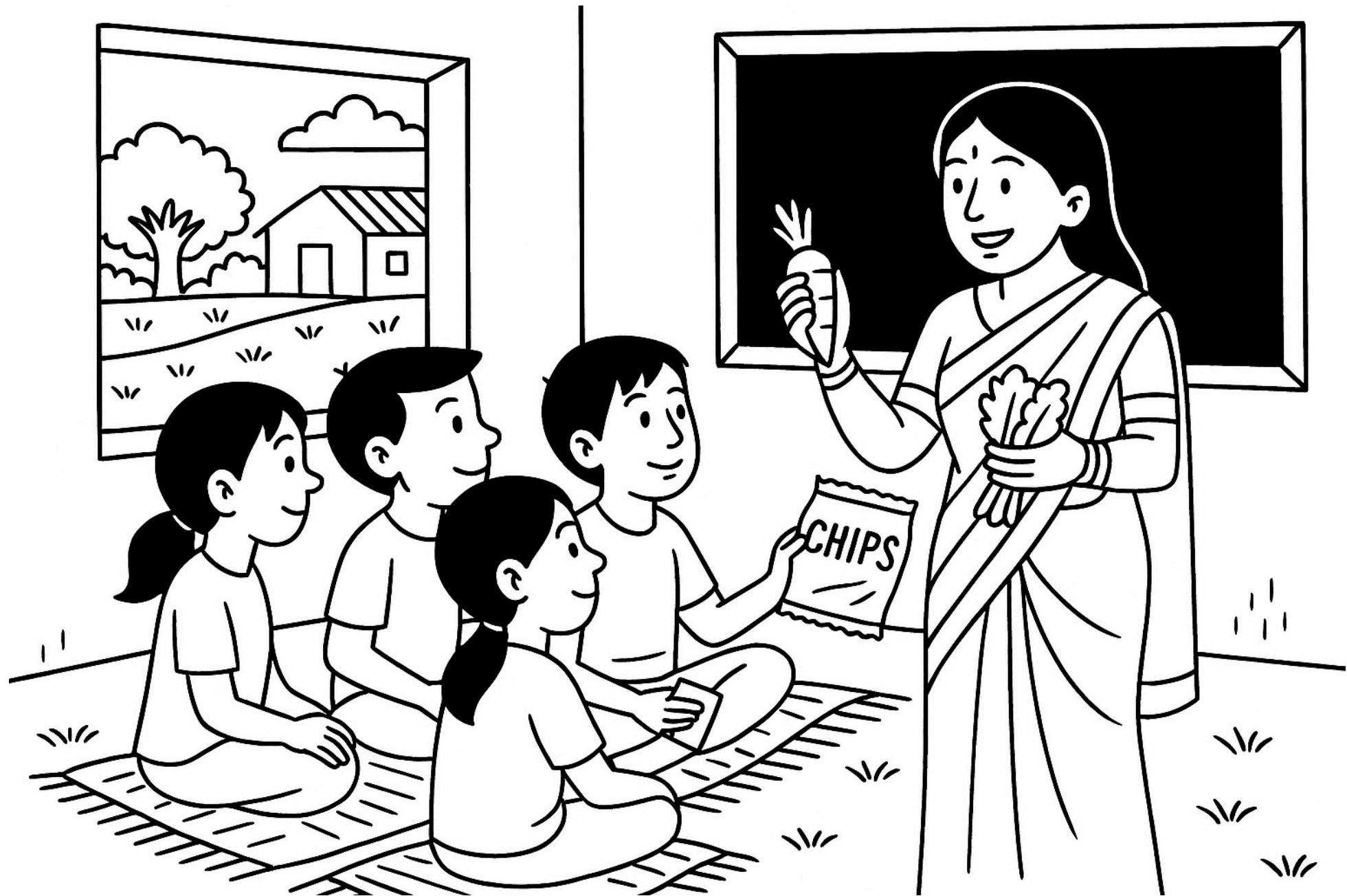
आमारै गाउँ बौरी बौडिया देखणे खि,
औजि आमारै गाउँ दि बौडे बौडे डोखरे
जिन्दै मोत्तौइ शाग, फळ औजि नाज़
औये बौआन्दौ। जेसकोइ सारिउँ कै
ताज्जौ शाग, फळ औजि नाज़ आसानी
कौइ मिलै।



गाउँ रे पेटारे ज़ादा बौज़ारे कौइ पैकिट
वाळौ खाणौ खौरिदैण, सेउ बौड़िया तै
लागै पर सेउ आमारे शौरीर दि नुकशान
पौंचा ।



एक दूस गुरज़िएइ इस्कुल दि पेटारै
सौमज़ाये कि आमारै शौरीर खी आपडै
डोखरै रौ ताज़ौ शाग, फळ औज़ि नाज़
बौड़िया औयै, तेसकौइ आम्के ताकत
औज़ि आमारी सेहत बौड़िया बौणै।



आौजि बोलौ कि आमखि सारितुँ कौइ
बौड़िया खाणौ, गौरवा चाउळ, दाल,
रोटी आौजि ताज़ौ शाग आमारै शौरीर खी
बौड़िया खाणौ।



गाउँ री एक दादीएङ्ग पेटारौड़ुं के आपडे
डोखरेदि शाग बौआौ-दौ देखाळौ, तिंये
बोलौ कि एउटई आमारे शौरीर खी
बौडिया ताकती खाणौ।



औजि पेटारौडुँ एशौ बी शिकौ कि फळ
बी आमारै शौरीरेड मज़बुत चाणैण,
जेशौकि आम, सेब, अमरुद, पौपिता,
नाशपती, तौरबुज, केळा, ऐ सारै फल
आमखी फाइदै वाळै ।



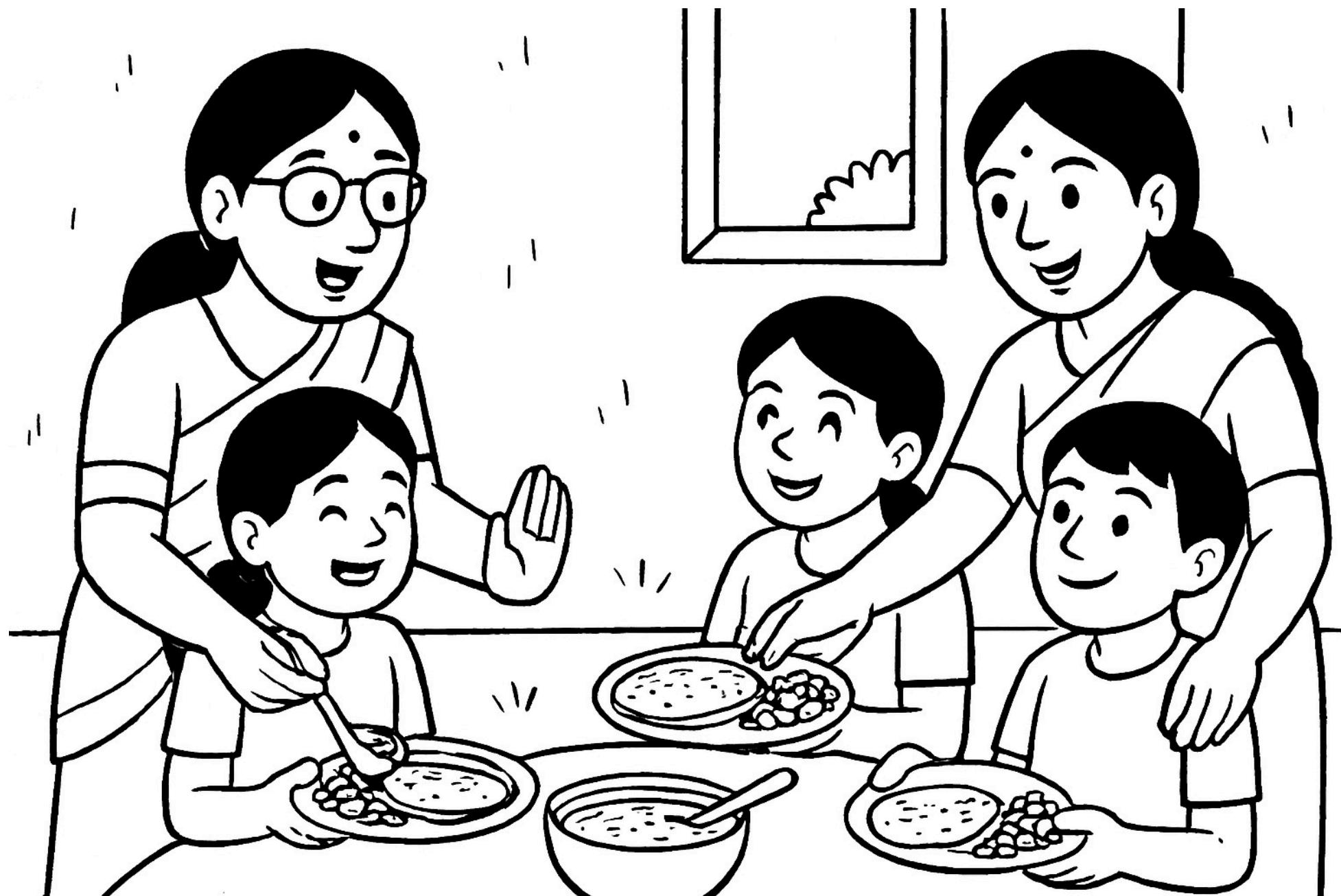
गुरज़िएङ्ग पेटारौड़ आरी एशौ बी बोलौ
कि दाळ औज़ि दूद कौइ पेटारौड़ के
ताकत औज़ि तिउँरौ शौरीर बौड़णे खी
मदद कौरै।



आौज़ि एशौ बी बोलौ कि तेल आौज़ि
मौसालै बी ज़रुरी चाइं, पर ज़ादा तेल
आौज़ि मौसालै वाळौ खाणौ खाइयौ
आमैं बीमार बी आई सौकिण। एज़ि
बैज़ै कौइ कम तेल आौज़ि मौसालै
वाळौ ई खाणौ खाइयौ।



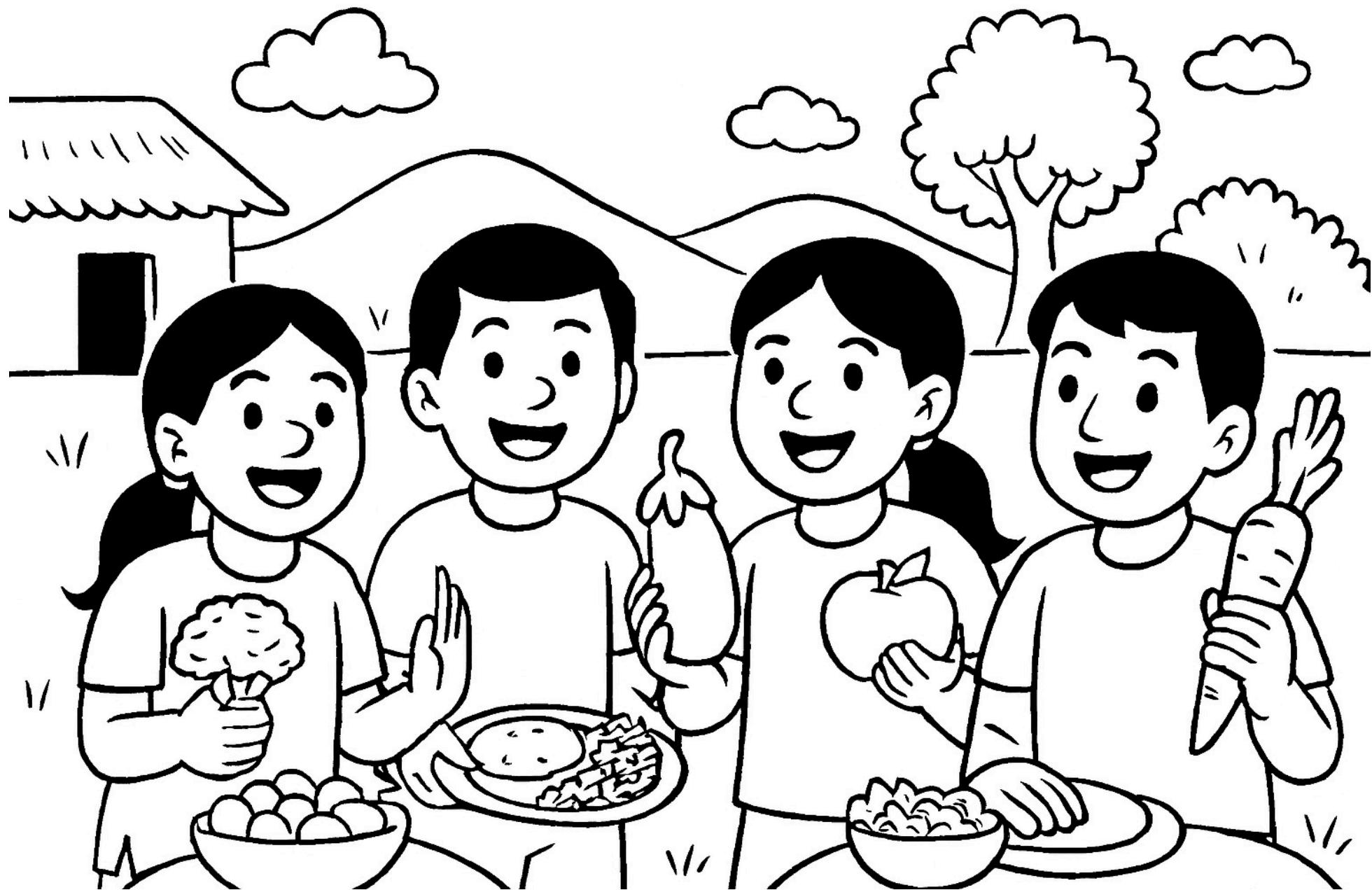
तैबै पेटारौडुं बी एशौ तय कियौ कि आमैं
पैकिट वाळौ खाणौ कम खाइण औज़ि
आपडे डोखरेदि बौआौन्दौ नाज़ेइ जादा
खाणेखि इस्तेमाल कौरी लै।



तिउँरी आमा बी खुश उई, औज़ि
पेटारौउँ आरी गौरवा खाणौ चाणने
रौ वादौ कियौ । तैबै सै खाणौ चाणदि
लागी ।



आराम आराम कौइ गाउँ रै लोगु बी
गैरवा शाग, फळ, औज़ि नाज़ खाणौ
शुरु कियौ। जेसकौइ सारै लोग
बिलकुल ठीक थै।



औज़ि पेटारै बी खुब मजबुत थै, औज़ि
गौरवा खाणौ तिउँकै बौरी पसंद थौ, सै
एशौ बोलैण थै कि गौरवा खाणौ आमारौ
सेहत रौ खौज़ानौ ।

For the Teacher

This Big Book is designed to be used for two weeks. It promotes enjoyment of storybooks, development of vocabulary, the skills of prediction, sequencing and main idea, and the understanding that books are made up of words.

On **Monday**, the teacher

- shows everyone the cover of the book
- reads the title, while moving a finger under it
- turns to the first page, and discusses the picture (asks the children to predict what will happen)
- reads the text on the first page, fluently (not slowly), and
- asks the children what they think they will see on each page. (The teacher is the only one “reading.”)

On **Tuesday**, the teacher

- shows everyone the book, and
- reads the story again, following the words with a finger, without as much discussion of the pictures.

On **Wednesday**, the teacher

- invites children to join in with “reading” when the story comes to parts which are familiar to them
- shows a flashcard from the story and tells the class what the card says, and
- invites children to find the same word in the storybook (or to match the card with the word in the book to see if it is the same)

On **Thursday**, the teacher

- points smoothly to the words in the story and lets some volunteers “read” a page, if they can remember the story by now, and
- lets the children match the flashcards to the words in the story.

On **Friday**, the children

- act out (dramatize) the story as others help the teacher “read” it.

यह किताब NLCI के द्वारा तैयार की गई है।

हम मात्रभाषा में साक्षरता कार्यक्रम करते हैं। जिसके अन्तर्गत हम अपने क्षेत्र में अलग अलग भागों में शिक्षा देते हैं। जिसमें हमारा उद्देश्य यह है कि, हमारे क्षेत्र के असाक्षर लोग और बच्चे साक्षर हो सकें। और पढ़ लिख कर अपने समाज का विकास कर सकें।

हम जानते हैं कि हमारे क्षेत्र के अधिकतम लोग बोल-चाल में हो या काम-काज में हर स्थान पर अपनी मात्रभाषा का उपयोग करते हैं। इसलिए हम अपने क्षेत्र के लोगों के लिए जो भी पाठ्य सामग्री तैयार करते हैं। उसे उन्हीं की मात्रभाषा में तैयार करते हैं। जिससे उन्हें पढ़ने और लिखने में आसानी हो और वो जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख सकें।

हम अपनी संस्था में साक्षरता के द्वारा मात्रभाषा में व्यस्क शिक्षक ही नहीं चलाते बल्कि, अपने क्षेत्र में पढ़े-लिखे लोगों के लिये तथा बच्चों के लिये भी अलग-अलग तरह की पाठ्य सामग्री भी उन्हीं की मात्रभाषा में उपलब्ध कराते हैं। जिससे की बच्चे अपने बचपन से ही अपनी मात्रभाषा को महत्व दें जिससे हमारी भाषा लुप्त ना हो। हम प्रार्थना करते हैं कि हमारे क्षेत्र के सभी लोग पढ़ लिख सकें और हमारे क्षेत्र का और अधिक विकास हो सकें।

,,,,,,,,,,धन्यवाद,,,,,,,,,,

